Published By :
Principal
Smt. R. M. Prajapati Arts College, Satlasana
NAAC Accredited 'B' grade
College with potential Excellence

ISBN : 978 - 81 - 926211 - 1 - 1

Price :

All rights reserved, no part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means, electronic or mechanical including photocopy, microfilm, recording, email, web, publication or any information storage and retrieval system without the written permission of the copyright owners.

Composed and
Printed By:
Karuna Publishing Cottage,
Idar Gujarat

year - 14 - may

विवरणिका

क्र.सं.	शोध लेख एवं लेखक
1.	भागवत् में निरुपित योग की विशेषता डॉ. मंजुला बेन ए. पटेल
2.	कूर्म पुराण में राजनीति एवं राज्य व्यवस्था डॉ. भगवानभाई के. प्रजापति
3.	शिवपुराण में प्रकृति प्रेम का अमर संदेश डॉ. रमेश एस. प्रजापति
4.	कालिका पुराण में स्थल माहात्म्य डॉ. राधाबहन एम. पटेल
5.	श्रीमद् भागवत की गोपीकथ्यसा में काव्यता डॉ० महेन्द्र कुमार अं० दवे
6.	गरूण पुराण की उपयोगिता डा० गायत्री सी बारोट
7.	पुराणों में धर्म की धारणा श्री शैलेषभाई, पुरूषोत्तमभाई बारोट
8.	पुराणों में सगर : एक समीक्षा प्रो० डा० मनसुख पटोलिया
9.	कालीकापुराण (शाक्ति पुराण) में उपासना पद्ध डॉ. कुसुम डी. अखानी
10.	उत्तर गुजरात के शाक्ति-स्थल पुराणों में सामर् प्रो. समीर कुमार के. प्रजापति
11.	पुराणों में निरूपित वैदिक संदर्भ प्रो० विनुभाई एम० पटेल
12.	मार्कण्डेय पुराण में नारी गौरव प्रो. शैलेश के जोशी
13.	श्रीमद् भागवत में निरूपति अवतारों क डॉ० मनोज कुमार एल० प्रजापति
14.	ब्रह्मपुराण में धर्म प्रो. सोनी भावना जी
15.	ऐतिहासिक तथा भौगोलिक दृष्टि से कूर्म पु डॉ. करुणा एस. त्रिवेदी
16.	श्रीमद् भागवत पुराण में युद्ध एवं सैन्य सं डॉ. दक्षा के. जोशी
17.	कूर्म पुराण में निहित त्रिविध भावना

और व्रत मानो एक ही क्रिया विशेष का आभास करवाते हैं। पृथ्वी की शुद्धि से पर्यावरण स्वच्छ होता है। गाय के गोबर में कीटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता है। अतः गाय पर्यावरण में सहायक है। इसके गोबर से भूमि को लीपने से संक्रमण का भय नही रहता है। धातुएँ भी शुद्धि में उपयुक्त है। ताम्रपत्र का स्वास्थ्यप्रद होता है। कदली स्तम्भ, फल व पत्तियों से अलंकृत मण्डप वृक्षारोपण व वनस्पति संरक्षण की चेतना जागृत करते हैं। आज प्रदूषित परिवेश और परिवर्तित जीवन शैली के फल स्वरूप हम अनेक असाध्य रोगों से पीड़ित रहते हैं। इससे मुक्त होने के लिए शिव उपासना सुधा स्रोत है। उपासना में सत्य असत्य निरुपण का विज्ञानप्रछन्न रुप से समाहित है। धर्म शास्त्रों और पुराणों में प्रकृति तथा ऊर्जा के आयामों का वर्णन है। अतः हमें लौकिक सिद्धान्तों व वैज्ञानिक पक्षों का अनुशीलन कर पर्यावरण संरक्षण का चिन्तन करना चाहिए-

शिवालये बिल्ववने संहितां तां पठेत्तु यः ।
स तत्फलमवाप्नोति यद्वाचोऽपि न गोचरे ॥

अर्थात् शिवालय में व बेल के वन में, जो इस संहिता का पारायण करता, उसका फल वाणी से नहीं कहा जा सकता।[2]

तदिदं पञ्चभूतेषु दृश्यते मामकैजर्नैः।
सृष्टिर्भूमौ स्थितिस्तोये संहारः पावके तथा ॥

मेरे पञ्चकृत्य को पृथ्वी आदि पाँच भूतों में मेरे भ गण योग दृष्टि से साक्षात्कार कर सकते हैं। पृथ्वी में सृष्टि, जल में स्थिति, पावक में संहार, पवन में तिरोभाव तथा आकाश में अनुग्रह, पृथ्वी उत्पन्न करती है, जल पोषक द्वारा स्थिति करता है।

अर्धते तेजसा सर्वं वायुना चापनीयते ।
व्योम्नाऽनुगृह्यते सर्वं ज्ञेयमेवं हि सूरिभिः ॥

अग्निरुप तेज भस्म करता है, वायु से सब इधर उधर ले जाए जाते हैं तथा आकाश से अनुग्रह होता है। इस प्रकार यह सभी पक्ष मनीषियों द्वारा चिन्तनीय है।[4]

शिवालय में और बेल के वन में इस संहिता का पारायण करते हुए प्रकृति, जल, वनस्पति और प्राणी मात्र के संरक्षण का संकल्प करना श्रेयसकर और कल्याणकारी होगा। जीवन को हितकारी और सृजनात्मक बनाए बिना हमारे जीवन का सही दिशा में रूपांतरण नहीं हो सकता है वैज्ञानिकों का अभिमत है कि दुनिया आज विनाश के कगार पर बैठी हुई है। प्रदूषण से दुनिया का कवच ओजोन परत में छिद्र बढ़ता है यह ओजोन परत सूर्य से आने वाली हानिकारक किरणों (अल्ट्रावायलेट किरणों) को छानने का कार्य करती हुई पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा का दायित्व निर्वाह करती है, किन्तु ओजोन परत में छिद्र होने से ये हानिकारक अल्ट्रावायलेट किरणें चतुरेखीय गति से पृथ्वी पर पहुँच रही हैं। जिससे ग्लोबल वार्मिंग के साथ-साथ वन जीवन व फसलें भी प्रभावित हो रही हैं। अस्तित्व के लिए संघर्ष हो रहा है, जिसमें योग्यतम की विजय निश्चित है। हमें उस सोपान परम्परा का निर्माण करना होगा, जिसके आधार से देवगणों ने प्राकृतिक सन्तुलन बनाया और अमरत्व तथा आरोहण किया। हमें इस चेतना को निम्नता से उच्चता की ओर उठाना चाहिए।

पादटीप-

1. शिवालये च तीर्थे........ सम्पूग विश्वमौतानराक्तिः ॥ (शिवपुराण 6,13,20,21)
2. शिवपुराण विद्येश्वर संहिता (2.44.34)
3. शिवपुराण विद्येश्वर संहि (10.7.54)
4. वही, (10.3.55)

*****

कालिकापुराण में स्थलमाहात्म्य

*डॉ० राधाबहन एम० पटेल

कालिकापुराण को प्रायः उपपुराणों की सभी सुचियों में समाविष्ट किया गया है[1]। विशेष में स्मृति के टीकाकारों एवं निबंधकारों ने उसका विपुल उपयोग किया है। कालिकापुराण में बहुत सारे उदाहरण दिये है किन्तु उपलब्ध कालिकापुराण में बहुत सारे श्लोक मिल नहीं रहे थे। बल्लालसेन, हेमादि, लक्ष्मीधर आदि ने कालिकापुराण के उदधृत किये श्लोक अनुक्रम से दानसागर चतुर्वर्गचिन्तामणि के कृत्यकल्पतरू में है ये इस कालिपुराण में नहीं है। अर्थात उन्होंने किसी प्राचीन कालिकापुराण में से ये श्लोक दिये होंगे। यह कालिकापुराण तांत्रिकविधिविधान से मुक्त था। कालिकापुराण को देवीपुराण का तंत्रग्रंथ कह के उपपुराणों में स्थान दिया है। अर्थात कालिकापुराण के वर्णनकार बल्लालसेन उस कालिकापुराण से परिचित थे। यह तांत्रिक प्रभाव से परे था।

हेमाद्रि कालिकापुराण को जानते है। वे शिवको सबसे श्रेष्ठ देव मानते है। जब कि इस कालिकापुराण में विष्णु को सबसे श्रेष्ठ देवत्व दिया गया है और कालिका को उनकी माया या शक्ति कही गयी है[2]।

प्राचीन कालिकापुराण ई.स.– 600 पूर्वे नही रचा गया यह हेमाद्रिने उदधृत किये श्लोक पर से मान सकते है। यह कालिकापुराण भागवत को इ.स.–छट्वी शती की कृति मानता है[3]।

विशेषतः हेमाद्रि लक्ष्मीधर यादि ने दिये उदाहरण बताते है कि भारत के अलग–अलग प्रदेशों में यह प्रचलित हो चुका था। अतः ई.स. दशवी शती के पश्चात रचा हुआ न होगा ई.स. के दशवीशतक तक उपपुराणो की सूची तैयार हुई तब अटारहपुराणों में वह स्थान प्राप्त कर चुका था। इसके उपरान्त ई.स.–700 के प्रायः यह पुराण रचा हुआ मान सकते है। श्री के०एस० बरूआ मानते है कि उपलब्ध कालिकापुराण ई.स. की ग्यारहवीं सदी में ब्रह्मपाल वंश के राजा धर्मपाल के समय में रचा था। उस समय में प्रागज्योतिरूपुर की राजधानी कामरूप थी। एवं कामाख्या का मंदिर प्रसिद्ध हो चुका था। इस समाज में तंत्रविद्या प्रचलित बन चुकी थी [4]। बहुआ के इस मत का तीर्थनाथशर्मा ने अधिक समर्थन करके अधिक आंतर प्रमाण एकत्रित किये है। बारबार श्लेष के प्रयोग हुए है [5]। धर्मपाल के शिलालेख के साथ इसकी तुलना कीये जा सकती है ये धर्मपाल ई.स.–1990 से 1115 तक हो गये है [6]।

*पी०डी० मोदी आर्ट्स कॉलेज,
पालनपुर (संस्कृत अध्यक्ष)